Artistic Narration Vol. XIII No. 2 July-Dec. 2022 ISSN (P): 0976-7444 (e): 2395-7247
Impact Factor 8.851 (SJIF)

रामगोपाल विजयवर्गीय के चित्रों में कला तत्व अध्ययन एक विश्लेषण

डॉ० नुपूर शर्मा
एसोसिएट प्रोफ़ेसर
ललित कला विभाग
नानक चन्द एंग्लो विश्वविद्यालय, मेरठ

कु० सोनिया
शोधार्थी
ललित कला विभाग
नानक चन्द एंग्लो विश्वविद्यालय, मेरठ
ईमेलः soniyaphd5194@gmail.com

Reference to this paper should be made as follows:

डॉ० नुपूर शर्मा,
कु० सोनिया

रामगोपाल विजयवर्गीय के चित्रों में कला तत्व अध्ययन एक विश्लेषण

Artistic Narration 2022,
Vol. XIII, No. 2,
Article No. 17 pp. 115-121

https://anubooks.com/journal-volume/artistic-narration-2022-vol-xiii-no2

सारांश

रामगोपाल विजयवर्गीय जी राजस्थान के प्रसिद्ध कलाकारों में से एक हैं। इन्होंने राजस्थान में रहते हुए वॉश तकनीक में जो कार्य किया है वह अत्यंत सराहनीय है। रामगोपाल विजयवर्गीय जी चित्रकार के साथ–साथ एक कवि व लेखक के रूप में भी जाने जाते हैं। विजयवर्गीय जी ने कला क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया है जिसके लिए इनको अनेकों पुरस्कार व सम्मान से नवाजा गया है। इन्होंने अधिकांश चित्र भारतीय संस्कृति से सम्बंधित जल रंग व वॉश तकनीक में बनाए हैं। प्रारम्भ में अजंता, बंगाल शैली और राजस्थानी लघु चित्र व मालता शैली से प्रभावित होकर भी इन्होंने चित्रों की रचना की है। इनके अनेक चित्र किसी एक विषय पर आधारित न होकर अलग–अलग विषयों पर देखने को मिलते हैं जैसे मेघदूत, उमर खैय्यम, राग–रागिनी, बाजार की ओर, रिक्शा चालक, इंद्रजीत विजय आदि।

डॉ० नुपूर शर्मा, कु० सोनिया

प्रस्तावना

जीवन परिचय

रामगोपाल विजयवर्गीय जी का नाम राजस्थान के अग्रणी चित्रकारों में सम्मानपूर्वक लिया जाता है। साधारण सरल स्वभाव वाले व्यक्ति रामगोपाल विजयवर्गीय जी जिन्होंने राजस्थान कला क्षेत्र में वो ज्योति प्रज्वलित की है जिसके लिए राजस्थान की कला व समस्त कलाकार सदा आपके ऋणी रहेंगे। राजस्थान में रहते हुए ही उन्होंने बंगाल की वॉश शैली में कार्य कर राजस्थान कला में महत्वपूर्ण योगदान दिया। पदमश्री रामगोपाल विजयवर्गीय जी रंग व रेखाओं के जादूगर थे। इनकी रेखाओं में गति, तेज व सौन्दर्य का अद्धभुत सामंजस्य है। विजयवर्गीय जी ने जहां कलाकृतियों में रेखाएं पतली व अस्पष्ट बनाई हैं, तो वहीं दूसरी ओर मोटी रेखाओं का प्रयोग भी किया। रामगोपाल विजयवर्गीय जी ने कलाकृतियों के माध्यम से अनेक रूपों को अपने विषय के लिए चुना है। इन्होंने अपनी कलाकृतियों में रंगों को अलग–अलग तकनीक में प्रयोग किया है। विजयवर्गीय जी ने कलाकृतियों में नारी आकृति के अंगों की सुडोलता, वस्त्र व मुखाकृति की भाव–भंगिमा को निपुणता के साथ दर्शाया है। विजयवर्गीय जी आज हमारे बीच नहीं रहे किन्तु इनकी कला साधना व आश्चर्यचकित कर देने वाली सौंदर्यपूर्ण मानवकृतियाँ व साहित्य रचनाये विजयवर्गीय जी के रूप में आजीवन हमारे बीच रहेगी। कलानिधि के भंडार पदमश्री से सम्मानित रामगोपाल विजयवर्गीय जी का जन्म सन् 1905 में राजस्थान के सवाई माधौपुर जिले के गांव बालेर में हुआ था। इनके पिता जी भँवरलाल विजयवर्गीय जी जो व्यावसायिक थे और इनकी माता श्रीमती मोतिया कुशल गृहिणी थी।

शिक्षा

रामगोपाल विजयवर्गीय जी की प्रारंभिक शिक्षा अपने माता–पिता के निर्देशन में ही पूर्ण हुई। माता–पिता के साथ–साथ उन्होंने कुछ अन्य भाषाओं जैसे उर्दू, फारसी व संस्कृत आदि का ज्ञान अन्य गुरुओं के निर्देशन में प्राप्त किया। इनके पिता चाहते थे कि ये कुशल वकील बने किन्तु विजयवर्गीय जी की बचपन से ही रुचि चित्रों की ओर होने के कारण पिता के अत्यन्त प्रयास के बाद भी ये अपने पिता के सपने को साकार करने में असफल रहे। इनके पिता जी भँवरलाल जी के अथक प्रयासों के बावजूद भी जब इनका मन पढ़ाई में नहीं लग पाया तब इनके पिताजी ने इनका प्रवेश जयपुर के महाराणा स्कूल ऑफ आर्ट में करा दिया। यहाँ पर इन्होंने शैलेन्द्रनाथ–डे जी से शिक्षा प्राप्त की और अति लगन व मेहनत से कार्य करते हुए छः माह में डिप्लोमा प्राप्त कर लिया। 'सर्योग से कलकत्ता में प्रकाशित होने वाली अंग्रेजी पत्रिका ''मॉडर्न रिव्यु'' के सम्पादक रामानन्द चटर्जी ने इनके द्वारा बनाए गए जिनमें तीन नारियां सिर पर घड़ा लिये हुये थी को प्रकाशित कर दिया।[1]'' सन् 1945 से 1966 के मध्य रामगोपाल विजयवर्गीय जी ने प्राचार्य पद पर रहकर कार्यभार संभालते हुए राजस्थान स्कूल ऑफ आर्ट को गौरवान्वित किया। राजस्थान ललित कला अकादमी ने 1958 में पुरस्कृत किया। '1970 में

राजस्थान ललित कला अकादमी द्वारा श्री विजयवर्गीय को 'कलाविद' की उपाधि से सम्मानित किया गया तथा 1984 में भारत के भूतपूर्व राष्ट्रपति जानी जैनसिंह द्वारा ''पदमश्री से अलंकृत किया गया।[2]''

रामगोपाल विजयवर्गीय जी के प्रमुख चित्रों में से कुछ चित्रों का वर्णन इस प्रकार है जैसे– मेघदूत, गीत–गोविन्द, रामायण महाभारत, अभिज्ञान शाकुंतलम्, उमर खैय्याम, कुमार सम्भव, बिहारी सतसई आदि रहे हैं। साथ–साथ इन्होंने साधारण जन–जीवन वृद्ध किसान, श्रमिक तांगावाला, पनघट की ओर, सुबह का गीत–संगीत, बाजार की ओर आदि को भी अपनी तूलिका के माध्यम से जीवन्त रूप प्रदान किया लेकिन स्त्री इनके चित्रण का केंद्र बिंदु रही है। स्त्री के सौन्दर्य, लावण्य रूप व वस्त्रों की सलवटे और मुख पर मंद मुस्कान को आदर्श रूप में प्रस्तुत किया है।

रामगोपाल विजयवर्गीय जी के प्रमुख चित्रों का विस्तारपूर्वक वर्णन निम्न प्रकार है–

1. मेघदूत

1955 में चित्रित मेघदूत कलाकृति में एक युवक को यक्ष के रूप में पत्थरों के बीच दर्शाया गया है। यक्ष के पीछे एवं दायें–बाये कुछ वृक्षों को दर्शाया गया है। यक्ष के पीछे कुछ झोपड़ियां बनाई गई है। आसमान में कुछ पक्षी विहार कर रहे हैं। यक्ष के पास दूत रूपी बादल सर्पाकार आकृति में बनाए गये हैं। यक्ष को एक चश्म चेहरे में बनाया गया है। पोशाक में बायें कंधों पर सफेद रंग का पटका डाले हुए तथा पीले रंग की धोती पहने हुए हैं। सम्पूर्ण चित्र में लयात्मक रेखाओं का बड़ा महत्व है। रंगों को वॉश पद्धति में लगाया गया है।

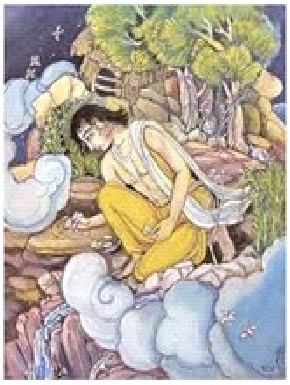

मेघदूत

2. अलकापुरी की नववधू

अलकापुरी की नववधू

चित्र में एक नायिका को नववधु के रूप में दर्शाया गया है जिसमें नायिका का मुख थोड़ा बायी ओर झुका हुआ दो चश्म बना है। नायिका की बड़ी–बड़ी आंखें लम्बी नाक, ऊपर का ओष्ठ पतला व नीचे का ओष्ठ थोड़ा मोटा, घुंघराले बाल व दोहरी ठुड्डी बनी है। कानो में पुष्पाकार कुंडल, दाये हाथ में कमल, गले में आभूषण व वक्ष पर पारदर्शी सुन्दर वस्त्र धारण किए हुए नाविका सुशोभित हो रही है। पीछे की ओर घुमावदार व सर्पाकार बादलों का अंकन किया गया है। सम्पूर्ण चित्र में रेखाओं व रंगों का मार्मिक ढंग से प्रयोग हुआ है।

3. फल बेचने वाली

फल बेचने वाली

इस चित्र में एक महिला को दर्शाया गया है। महिला को फल की टोकरी के साथ फल बेचने के लिए जाते हुए चित्रित किया गया है। चित्र में महिला का चेहरा एक चश्म अंकित किया गया है। महिला की नासिका लम्बी और ओष्ठ पतले व नुकीली चिबुक बनी है। महिला के हाथ में, गले में व कानों में आभूषण ध ाारण किए हुए दर्शाया गया है। महिला फलो की टोकरी कमर से सटाये हुए बाएं हाथ से पकड़े हुए है व दाहिना हाथ भी फलों की टोकरी के ऊपर रखा हुआ है। महिला लाल रंग का लहंगा व चोली पहने हुए हैं तथा सिर पर पीले रंग की ओढनी ओड़े हुए है जो हवा में लहरा रही है। पृष्ठभूमि में नीले रंग का प्रयोग हुआ है और हरे व पीले रंग से कुछ वृक्ष सुशोभित हो रहे हैं। सम्पूर्ण चित्र में बारीक, लयात्मक रेखाओ का प्रयोग किया गया है जो दर्शको के मन को मोहित करता है।

4. मेघदूत श्रंखता का एक चित्र

मेघदूत श्रंखला का एक चित्र

रामगोपाल विजयवर्गीय जी ने 1940 ई० में चित्रित किया था इस चित्र में यक्ष व यक्षिणी को विशेष लयात्मक के साथ बादलों पर सवार आकाश में चित्रित किया है। आकाश को नीले रंग व बादलों को सफेद रंग से चित्रित किया है। यक्ष हरे रंग की धोती पहने, गले में मोतियों की माला, कानों में कुंडन, मुख पर मंद–मंद मुस्कान, दाहिने हाथ में कमल पुष्प से सुशोभित हो रहा है। यक्ष के पीछे पीठ से सटकर बैठी यक्षिणी इस प्रकार चित्रित है मानो वे विचरण के लिए निकले हैं। यक्षिणी के बाल लूड़े में बँधे हुए हैं। गले में मोतियों की माला, वक्ष पर गुलाबी रंग का वस्त्र व कमर नीचे सिलवटेदार पीले रंग का वस्त्र पहने है, हाथों में बाजूबंद, पैरों में पायल पहने हुए, यक्षिणी अत्यन्त सुशोभित हो रही है। यक्षिणी की आंखों में प्रेम व मुख पर धीमी मुस्कान दशकों का मन मोह लेती है। सम्पूर्ण चित्र में रेखाओं व रंगों का प्रयात्मक संयोजन है। यह चित्र कागज पर जन–रंग माध्यम और टेम्परा व वॉश तकनीक में बना है। आधुनिक काल में बना यह चित्र राष्ट्रीय कला संग्राहलय नई दिल्ली में सुरक्षित रखा है।

चित्रों में कला तत्वों का समावेश

1. रेखा

सभी कलाकार अपनी कलाकृतियों में अलग–अलग प्रकार से रेखाओं का प्रयोग करते हैं जैसे सभी कठोर पलयात्मक, चक्राकार, कुंडलित रेखा आदि विजयवर्गीय जी ने रेखा को

कठोर रूप न देकर कोमल, सरल, भावुकता के साथ आकृति को सुंदर व सुडौल रूप प्रदान किया है। विजयवर्गीय जी ने रेखा के माध्यम से चित्रों में यथार्थतालाने का भरषक प्रयास किया है। निर्जीव आकृतियों को सजीव ढंग से प्रस्तुत कर अनूठा योगदान दिया है। इनके चित्रों में रेखाये सरल, स्पष्ट, घुमावदार और कहीं पर मोटी व कहीं पतली बन पड़ी है प्रायः रेखा सरल व लयात्मक प्रतीत होती है। इन्होंने घुमावदार रेखाओं के माध्यम से बादल, गति व लयात्मक रूप में बने वृक्ष, लताये, मेघ आदि का अंकन किया है। 'वस्त्रों की सलवटे व आकृतियों का बाह्य रेखांकन यथार्थवादी दृष्टिकोण से किए गए गहन अध्ययन को इंगित करता है तो काव्यात्मक प्रभाव लाने के लिए वृक्ष, लताये, मेघ आदि परपोषक तत्वों को समाविष्ट किया गया है।[3]' इन्होंने विशेष रूप से नारी का अंकन किया है। हाथों की भाव–भंगिमाओं पर अजन्ता का प्रभाव प्रलक्षित होता है। रेखात्मक शैली में उन्होंने महानता हासिल की है।

2. रूप

कला तत्वों के अंतर्गत रेखा के बाद रूप महत्वपूर्ण स्थान रखता है। इन्होंने भी प्रत्येक वस्तु, आकृति आदि का रूप भिन्न–भिन्न रूप में बनाया है। कहीं–कहीं फलों की टोकरी ले जाती स्त्री, विरहणी, शकुंतला, अप्सरा, यक्ष–यक्षिणी, नववधु आदि। ''प्रत्येक कलाकार चित्रों में मौलिकता के सर्जन के लिए विभिन्न प्रकार के रूपों का प्रयोग करता है जो एक–दुसरे से प्रथक होते हैं।[4]' विजयवर्गीय जी के चित्रों में रूप प्रथक होते हुये कलाकृतियों में कविता, काव्य, नाटक, आदि का आभास होता है। प्रकृति का आकृतियों के अनुसार अंकन किया गया है। लहराते वृक्ष, उड़ते पक्षी, घुमावदार रूप में बादलों का अंकन करने से चित्रों की महत्ता अधिक बढ़ गयी है।

3. वर्ण

विजयवर्गीय जी के चित्रों में रंगों की मुख्य विशेषता रही है। विजयवर्गीय जी के अधिक चित्र वॉश पद्धति में बने हैं। वॉश शैली के अतिरिक्त विजयवर्गीय जी ने टेम्परा व तेल रंगों में भी कार्य किया है। वॉश और टेम्परा पद्धति में बनाया वॉश मिश्रित इनका चित्र ''मेघदूत'' प्रसिद्ध है। इस चित्र को इन्होंने 1940 ई० में बनाया था और इस समय यह चित्र राष्ट्रीय कला संग्रहालय नई दिल्ली में सुरक्षित है। विजयवर्गीय जी के चित्रों में आकृतियों को सरल बनाना व कोमलतापूर्वक रंग लगाना पसंद करते थे। ''मेघदूत'' ''अभिज्ञान शाकुन्तलम गीत–गोविंदा आदि वॉश पद्धति में बने चित्र इस प्रकार के उदाहरण है।

वॉश शैली में बने चित्र धुंधले व अस्पष्ट होते हुए भी दर्शकों के मन में एक विशिष्ट छाप छोड़ते हैं। वॉश पद्धति के अतिरिक्त इनके चित्र टेम्परा शैली में बने है। जैसे प्रतीक्षारत राधा इसका सुंदन उदाहरण है।

4. तान

रंग की विभिन्न रंगतों में कार्य करना रंगत कहलाता है। विजयवर्गीय जी ने रंगों को

विभिन्न प्रकार से प्रयोग किया है। कहीं गहरा, कहीं मध्यम, कहीं–कहीं सामान्य रंग की तान का प्रयोग किया। आकृतियों में एक ही रंग की अलग–अलग तान का प्रयोग किया है। अधिकांश चित्र में गहरा और मध्यम तान का प्रयोग मिलता है। बहुत अधिक प्रकाशित तान का प्रयोग बहुत कम मात्रा में देखने को मिलता है। उनके द्वारा बने चित्रों में प्रकृति के चित्रांकन में भी इन्होंने महानता हासिल की है। इनके द्वारा बने चित्र रंगमंच पर प्रस्तुत किसी नाटक को दर्शाते जो दर्शक के मन को मोहित करते हैं।

5. **पोत**

किसी भी वस्तु के धरातलीय गुण को पोत कहा जाता है। प्रकृति से प्राप्त सभी वस्तुओं का अपना गुण होता है जैसे पेड़–पौधे, फूल, पहाड़ आदि सभी में कठोरता या कोमलता का गुण विद्यमान होता है। विजयवर्गीय जी ने चित्रों में रंगों को कोमलतापूर्वक मिश्र करके वॉश तकनीक में कार्य किया है। इनके चित्रों के धरातल में कोमलता का गुण विद्यमान है जो दर्शकों को अपनी ओर आकर्षित करता है। कहीं–कहीं पर उन्होंने रंगों के द्वारा धरातल में पोत का प्रयोग कर बादल को सर्पकार बनाते तकनीक का प्रयोग किया है।

6. **अंतराल**

चित्रकार जिस चित्र भूमि पर अंकन करता है वह स्पष्टता द्विआवामी होता है यही अंतराल होता है। अतः हम कह सकते हैं कि ''चित्रकार का वह क्षेत्र जिस पर वह रूप का निर्माण करता है अंतराल कहलाता है।[5]''

विजयवर्गीय जी ने अंतराल को बखूबी चित्रित किया है। सभी रूपों को चित्र में सही ढंग से प्रस्तुत कर चित्र की सुंदरता को कई गुणा बढ़ा दिया है। इनके चित्र में आकृति व प्रकृति दृश का अंकन बहुत सुंदर ढंग से हुआ है। मुख्य आकृति को बड़ा करके चित्रों के केंद्र में प्रस्तुत किया है वहीं दूसरी और प्रकृति में वृक्ष, झोपड़िया को कलात्मक ढंग से प्रस्तुत किया है। प्रकृति, वृक्ष, झोपड़ियां मुख्य आकृति सभी रूपों को क्रमबद्ध के साथ संयोजित किया है। मुख्य आकृति आकार में बड़ी व गौने रूप में आकृति या प्रकृति आकार में छोटी व धुंधती बनाई है। ''सम्पूर्ण संयोजन में किसी एक आकृति को विशिष्ट नहीं बनाया फिर भी दर्शक की दृष्टि चित्र के केंद्र में रुकती हुई सभी आकृतियों पर घूमकर पुनः केंद्रीय आकृति पर रुकती है जो संयोजन का महत्वपूर्ण गुण है।[8]''

7. **मूल्यांकन**

राजस्थान कला क्षेत्र के अगुआ कलाकार व वॉश तकनीक में महारत हासिल करने वाले रामगोपाल विजयवर्गीय जी ने अपने यथार्थ चित्रों के लिए जाने जाते हैं। जहाँ एक ओर उन्होंने व्यक्ति चित्रण में भाव–भंगिमााओं को साहित्य रचनाओं की भांति प्रस्तुत किया है वहीं दूसरी ओर प्रकृति का भी मनन कर अपनी भावनाओं के अनुरूप प्रकृति का चित्रण किया है। इनके चित्रों में प्रकृति मानव की आशा व निराशा दोनों व्यवहार में प्रविष्ट हो जाती है। विजयवर्गीय जी

राजस्थान से जुड़े होने पर भी राजस्थान शैली से पूर्णरूप से समर्पित नहीं हुए। इन्होंने अपनी निजी शैली को जन्म दिया है जो विजयवर्गीय के नाम से जानी जाती है। आपका कला क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान रहा है जिसके लिए राजस्थान कला क्षेत्र व कला साहित्य सदा आपका ऋणी रहेगा।

संदर्भ ग्रन्थ

1. कुमारी, देवेंद्र. भारतीय कला का इतिहास. नई दिल्ली. पृष्ठ 77.
2. अग्रवाल, डॉ. गिर्राज किशोर. (2011). आधुनिक भारतीय चित्रकला. आगरा. पृष्ठ 61.
3. चतुर्वेदी, डॉ. ममता., विजयवर्गीय, रामगोपाल. (2005). एक शताब्दी की कला यात्रा. राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमीः जयपुर. पृष्ठ 31–32.
4. प्रदीप, डॉ. किरण. (2003). सर्जन के मूलाधार आकृति–1. मेरठ. पृष्ठ 4.
5. रस्तौगी, राशि. चित्रकला नोट्स. इलाहाबाद. पृष्ठ 13.
6. क्षेत्रीय समकालीन कला. ललित कला अकादमीः अंक–2. पृष्ठ 53.